IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"जोधपुर रियासत का लोक संगीत : एक विवेचन"

दीपक कुमार घारू
शोधार्थी, संगीत विभाग
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. रौशन भारती
प्राचार्य,
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

सारांश :–

इस शोध पत्र का उद्देश्य जोधपुर राज्य के लोक संगीत का अन्वेषण और विश्लेषण करना है, जो इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक महत्व ओर समकालीन संगीत परंपराओं पर इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। भारत के राजस्थान में स्थित जोधपुर, पारंपरिक लोक संगीत के अपने अनूठे मिश्रण के लिए जाना जाता है, जो इस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को दर्शाता है। अध्ययन में मांड, घूमर और भजन जैसे प्रमुख संगीत रूपों की जांच की गई है, जिसमें उनके क्षेत्रीय विविधताओं, वाद्ययंत्रों और प्रदर्शन प्रथाओं पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक कार्यो, अनुष्ठानों और समारोहों में लोक संगीत की भूमिका के साथ–साथ समुदाय की मौखिक परंपराओं को संरक्षित करने में इसकी भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। शोध में जोधपुर के लोक संगीत और व्यापक राजस्थानी संगीत परिदृश्य के बीच बातचीत का भी पता लगाया गया है, जिसमें पारंपरिक प्रथाओं पर आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव पर विचार किया गया है।

मुख्य शब्द :– लोक संगीत, मांड संगीत, भजन, घूमर, सांस्कृतिक, विरासत।

परिचय –

लोक संगीत भारत के सांस्कृतिक ताने–बाने में एक गहरा स्थान रखता है, और राजस्थान के हृदय में स्थित क्षेत्र जोधपुर क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। जोधपुर राज्य का लोक संगीत, जो इतिहास और परंपरा से समृद्ध है, एक अनूठा लेंस प्रदान करता है जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति क्षेत्र की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता, धार्मिक प्रथाओं और क्षेत्रीय पहचान का पता लगा सकता है। स्थानीय समुदायों के दैनिक जीवन में निहित, जोधपुर का संगीत क्षेत्र के अनुष्ठानों, उत्सवों और लोककथाओं के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, और आधुनिक संगीत शैलियों और वैश्वीकरण के अतिक्रमणकारी प्रभाव के बावजूद यह फल–फूल रहा है। जोधुपर का लोक संगीत, जिसे अक्सर शादियों, धार्मिक समारोहों और उत्सव समारोहों में बजाया जाता है। विभिन्न प्रकार के संगीत रूपों को शामिल करता है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट शैली और वाद़ययंत्र होते है। मांड, घूमर, और भजन जैसे प्रमुख रूप समुदाय की विविधता और आध्यत्मिक सार को दर्शाते है। इस क्षेत्र के संगीत की विशेषता पारंपरिक वाद़ययंत्रों जैसे सारंगी, ढोलक, शहनाई और मोरचंग का उपयोग है, जो एक विशिष्ट ध्वनि उत्पन्न करते हैं जो पीढ़ियों से चली आ रही है। संगीत, संस्कृति और सामाजिक कार्य के परस्पर संबंधी की जांच करके, अध्ययन यह पता लगाता है कि कैसे लोक संगीत ने न केवल ऐतिहासिक आख्यानों को संरक्षित किया है, बल्कि बदलते सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों के अनुकूल भी बना है। जोधपुर राज्य का लोक संगीत, जो इतिहास और सांस्कृतिक महत्व से समृद्ध है, इस क्षेत्र के सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक ताने–बाने की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है।

इसमें मांड, घूमर और भजन जैसे विभिन्न संगीत रूप शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक समुदाय की सांस्कृतिक प्रथाओं में अलग–अलग उद्देश्यों की पूर्ति करता है। मांड सामाजिक और धार्मिक समरोहों के दौरान इस्तेमाल किया जाने वाला एक कथात्मक रूप है, जबकि घूमर संगीत के साथ एक ऊर्जावान नृत्य है, जिसे अक्सर त्योहारों और समारोहों के दौरान किया जाता है। भजन, जो भक्ति गीत हैं, स्थानीय देवताओं की स्तुति में गाए जाने वाले क्षेत्र के आध्यत्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। इन संगीत रूपों की सारंगी, ढोलक, शहनाई और मोरचंग जैसे पारंपरिक वाद़ययंत्रों द्वारा समर्पित किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक जोधपुर के लोक संगीत को परिभाषित करने वाली अनूठी ध्वनियाँ प्रदान करता है। लोक संगीत क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लोगों को उनकी जड़ों से जोड़ता है और सांप्रदायिक पहचान व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह स्थानीय लोककथाओं, धार्मिक मान्यताओं और ऐतिहासिक घटनाओं को संरक्षित करते हुए एक शक्तिशाली कहानी कहने के माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। हालांकि, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण ने चुनौतियां पेश की हैं, क्योंकि समकालीन संगीत के रूझान पारंपरिक रूपों को पीछे छोड़ देते है। जोधपुर के लोक संगीत ने अनुकूलनशीलता दिखाई हैं, स्थानीय संगीतकारों ने मूल पारंपरिक प्रथाओं को

संरक्षित करते हुए आधुनिक तत्वों को मिलाया है। इस लोक परंपरा का भविष्य संरक्षण और नवाचार के बीच संतुलन बनाने पर निर्भर करता है, जिससे बदलते सांस्कृतिक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित होती है। जोधपुर का लोक संगीत क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत का एक अनिवार्य हिस्सा बना हुआ है, जो आधुनिकीकरण के दबावों से निपटते हुए इसकी अनूठी पहचान में योगदान देता है।

लोक संगीत– लोक संगीत एक समुदाय की संस्कृति, परंपराओं और दैनिक जीवन की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है, जो पीढ़ियों से चली आ रही है।

मांड संगीत– संगीत एक पारंपरिक राजस्थानी शैली है, जो अपनी भावपूर्ण धुनों और प्रेम, वीरता और भक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के लिए मनाई जाती है।

जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंह जी के शासन के अंतिम दशक में प्रसिद्ध सरोदावादक अली अकबर खां रियासत में कलावन्त नियुक्त हुए। मारवाड़ के रेडियों स्टेशन का शिप हाऊस में प्रारम्भ इनके प्रयासों से ही हुआ। खां साहब की देखरेख व दक्षिणी संगीत की महान् हस्तियों ने इसमें शिरकत की जिनमें ठाकुर ओंकारनाथ, उस्ताद फैयाज खां, सचिन देव बर्मन्, पुरूषोतम् दास, वी.जी. जोग, सरोदियो उमर खाँ, सितारिये मुश्ताक अली, अली अहमद, विलायत हुसैन, सारंगिये बुन्दुखां व गुलाम साबीर, तबलिये अहमदजान थिरकवा, बिस्मिला खां, नृत्य के लिये प्रो. नीलमाधव, उषा भाटिया और संतोष तथा मोहन कल्याणपुर की प्रस्तुतियों को अब तक याद करने वाले श्रोता अभी सूर्यनगरी में है।

खां साहब ने स्थानीय प्रतिभाओं को काफी प्रोत्साहन दिया। रामलाल माथूर, नरेन्द्रसिंह, और प्रसिद्ध सरोज वादक स्व दामोदर लाल जी काबरा की शिक्षा खां साहब से प्राप्त हुई। अली अकबर के अन्यतम प्रशंसक और संगीतानुरागी 'रसिकवर' शाह गोवर्धनलाल काबरा की ही अभिरूचि के कारण राष्ट्रीय कला मण्डल की की स्थाना हुई और संगीत कला केंद्र के माध्यम से संगीत की शिक्षा–दीक्षा का मार्ग प्रशस्त हुआ। छठे दशक में कुचामन की हवेली में प्रारंभ किए संगीत कला केंद्र में अध्यापन के लिए फिर से उस्तादों को बुलाने का क्रम शुरू हुआ। गायक कश्री पंत वैद्य प्राचार्य हुए और नृत्य के लिए जयपुर घराने के कुन्दनलाल गंगानी को बुलाया गया। बाद में गाने की तालीम देने के लिए श्री रामभाऊ, इचलकरंजीकर और ग्वालियर घराने के प्रतिनिधि पं. बी.एन. क्षीर सागर को निमंत्रित किया गया। पतंवैद्य के बाद दामोर लाल जी ने स्वयं प्राचार्य का पद संभाला।

निष्कर्ष –

जोधपुर राज्य का लोक संगीत इसकी सांस्कृतिक विरासत का एक जीवंत और अभिन्न अंग है, जो इसके लोगां की समृद्ध परंपराओं, ऐतिहासिक प्रभावों और दैनिक जीवन को दर्शाता है। सारंगी, ढोलक और अलगोजा जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों के उपयोग के साथ–साथ प्रेम, भक्ति और वीरता के विषयों पर आधारित भावपूर्ण गीतों के

साथ, यह क्षेत्र के सामजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने की एक अनूठी झलक पेश करता है। मधुर शैली और लयबद्ध पैटर्न राजस्थानी लोकगीतों का सार रखते हैं, जो अक्सर वीरता और आध्यात्मिक के आख्यानों को मिलाते है। जोधुपर के लोक संगीत का संरक्षण और संवर्धन न केवल इस सांस्कृतिक खजाने के अस्तित्व को सुनिश्चित करता है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए पहचान और निरंतरता की भावना को भी बढ़ावा देता है। अपनी कालातीत अपील के माध्यम से, जोधपुर का लोक संगीत अपने लोगों की स्थायी भापना और क्षेत्र की कलात्मक विरासत का जश्न मनाते हुए गूंजता रहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पेग, सी. (2001), लोक संगीत, ग्रोव संगीत ऑनलाइन।
2. पाधी, एस. (2007) इक्कीसवीं सदी में युवाओं के बीच पारंपरिक लोक मीडिया की प्रासंगिकता : जयपुर, राजस्थान में कॉलेज के छात्रों के बीच लोक रूपों की अपील और लोकप्रियता पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ आर्ट्स, 4(1), 61–70
3. दत्ता, डॉ. क्षीरसागर (2020) : राजस्थान के संगीतज्ञ एवं उनकी साधना, प्रकाशक : राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रथम संस्करण।
4. श्रीवास्तव डॉ. वीणा (2012) : भारतीय लोक संगीत (संरक्षण, संवर्धन एवं संभावनाएँ), राधा पब्लिकेशन प्रथम संस्करण।
5. कल्ला, डॉ. वन्दना (2014) : राजस्थान के लोक तत् वाद्य, राजस्थान ग्रन्थागार, प्रथम संस्करण।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation